रात्रि क्लास 8/7/68 ओमशान्ति दैवीगुण धारण है?

तुम सभी मास्टर पैगम्बर या मैसेन्जर बन जाते हो। बाप आते हैं पैगाम देने। जो और कोई दे न सके। बाप ही कहेंगे मुझ बाप को याद करो। तुम भी ऐसे समझावेंगे। गवर्नर को भी यही समझाना है ऊँच ते ऊँच है भगवान। उनको याद करने से सुख–शान्ति सभी मिलती है। जप साहब को तो सुख मिले। वह सुख मिलता है आधा कल्प। हमको ऊँच ते ऊँच बाप पढ़ाते हैं। वही बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। यह दुनिया है ही विकारी विषस। महिमा गाई जाती है निर्विकारी की। देवताएँ तो पवित्र निर्विकारी थे। उनकी पूजा करते हैं, याद करते हैं। देवताओं की दुनिया को वायसलेस कहा जाता है। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को कहा जाता है विकारी। 5 तत्व भी विकारी हैं। जिससे शरीर भी विकारी मिलता है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। तत्व भी तमोप्रधान है। सागर भी उछल देती है। इस समय हरेक चीज़ तमोप्रधान है। तुम बच्चे बैठे हो सारा ज्ञान बुद्धि में है। जानते हो बाप है ज्ञान का सागर। ऊपर से लेकर मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन का, सतयुग–त्रेता, द्वापर–कलियुग, संगमयुग यह सभी बुद्धि में होना चाहिए। और कोई मनुष्य मात्र नहीं जिसके पास यह नालेज हो। जो बाप बच्चों को दे रहे हैं। इस नालेज में ही बच्चों को रहना चाहिए। कोई ऐसा मनुष्य नहीं जिसको मूलवतन, सूक्ष्मवतन की याद हो। सतयुग किसको कहा जाता है यह कोई भी मनुष्य मात्र को पता नहीं है। तुम बच्चे ही जानते हो। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। आज यहाँ हैं कल सतयुग में होंगे। जैसे बाप के पास नालेज है वैसे तुम बच्चों के पास भी है। बीज और झाड़ वा ड्रामा। 84 जन्मों की यह कहानी कहो, नालेज कहो तुम बच्चों पास ह(ी) है। तुम बच्चे नालेज बैठ औरों को समझाते हो। पहले2 यह समझाना होता है। यह नालेज सिर्फ एक बाप के पास ही है जो बच्चों को देते हैं। यह नालेज और कोई में नहीं होती। यह मोस्ट वैल्युएबुल नालेज है। धर्म भी ऊँचा है। बाप ही आकर निर्विकारी देवता बनाते हैं। फिर विकारी बनते हैं। बातें बहुत सहज है। तुम पैगम्बर हो। मैसेन्ज देना है। मैसेन्ज है दो अक्षर का। मन्मनाभव–मध्याजीभव। बाप को याद करते2 हम पावन बन जाते हैं। पढ़ाई भी यह बड़ी सहज है। 84 चक्र की पढ़ाई है। है बहुत सहज। फिर भी नम्बरवार। हर एक पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। इस बेहद की पढ़ाई में भी नम्बरवार हैं। जितना पुरुषार्थ करते हैं उतना ही ऊँच पद पाते हैं। तकदीर में न है तो तदबीर भी क्या कर सकता है। तदबीर कराने वाला तो एकरस तदबीर कराते हैं। युक्ति बतलाते हैं। कब भी संशय में न आना है। यह नॉलेज सिवाय एक बाप के कब कोई दे नहीं सकते। मनुष्य से देवता कब कोई बना न सके। ऐसी पढ़ाई को कब छोड़ना नहीं चाहिए; परन्तु माया छुड़ा देती है। माया कशिश करती है। तो पढ़ाई छोड़ देते। तुम पढ़ते हो। एमआबजेक्ट कितनी बड़ी है। पढ़ाई से कब तंग न होना चाहिए। पढ़ाई जरूर पढ़नी है। बाप को जरूर याद करना है। मूल बात है ही पावन बनने की। बड़ा ही मीठा बाबा है जो पवित्र बनाते हैं। कब कोई भी झगड़ा हो सेन्टर का, आपस में ब्राह्मणी से ; परन्तु भूले–चूके भी पढ़ाई नहीं छोड़नी है। है बहुत सहज। हम आत्मा हैं बाप पढ़ाते हैं। माया तो आवेगी; परन्तु बात यह पक्की करनी है। बाप को याद करना है जिससे विकर्म विनाश होंगे। याद से पवित्रता और चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। खान–पान पर परहेज। वैष्णव तो बनना है। लाचारी हालत में क्या करेंगे। याद करके खाओ। भूख मरने की दरकार ही नहीं। किसको पैसे देंगे तो प्याज बिगर भी दे देंगे। आदत न डालेंगे तो भी मिल सकता है। केले से रोटी, बाजार से दही लेकर भी खा सकते हो। प्याज न खाना है तो न खाओ। रोटी में तो प्याज नहीं होता। रोटी निम्बू से भी खा सकते हो। रोटी पापर से भी खाई जाती है। यह बाप गांव का छोड़ा तो केले से रोटी खाते थे। युक्ति रचनी है। भूख नहीं मरना है। फिर भी बाप को याद करना है। बाबा जानते हैं बच्चे भूल जाते हैं। भोजन पर भी भूल जाते हैं। बाबा खुद भी कहते हैं भूल जाता हूँ। प्रैक्टिस चाहिए। बड़ी बात नहीं। बड़े ते

बड़ा पाप होता है विकार का।

कोई को भी पहले2 बाप की महिमा सुनाओ। ऊँच ते ऊँच है भगवान। फादर को सर्वव्यापी नहीं कहा जाता। बच्चों को तो वरसा मिलता है, योग सिखलाते हैं। उनको सर्वव्यापी कहना यह तो रांग है। कोई कारण पढ़ाई को नहीं भूलना है। पढ़ाई तो बिल्कुल ही सहज है। पहले–पहले यह सबक। बाप को याद करो तो विकर्म भस्म हो। अपन को आत्मा समझो। मेहनत इसमें हैं। यह ही घड़ी घड़ी भूल जाते हैं। पढ़ाई में जरूर डिफीकल्ट सबजेक्ट होगी जो इतना ऊँच पद मिलता है। तुम बच्चों के लिए बाप खुद कहते हैं माया का अपोजीशन है जो भूलाती है। अभूल बनना है। बाप कहते हैं अपने व्यवहार में भी रहो। काम–काज करते बाप को याद करो। आशुक–माशुक खाते–पीते एक/दो को याद करते हैं; इसलिए उनका नाम बाला हो गया है। तुम आत्माएँ सभी आशुक हो मुझ एक माशुक के। अभी मिला है तो अच्छी रीत याद करना चाहिए। फायदा बहुत है। विकर्म विनाश हो जाते हैं। खुशी बहुत होती है। सभी दुख दूर हो जाते हैं। अमरपुरी के गारन्टी करते हैं। यहाँ रहा खुआ(कुंआ) हिसाब चुक्तू होना है। वहाँ तो तुमको दुख भी न होगा। नाम ही है सुखधाम। तो जो मालिक बनाते हैं उस बाप को तो याद करनी चाहिए ना। तुम हर 5000वर्ष बाद यह सबक पढ़ते हो। बाप समझाते हैं। 84 का चक्र पूरा हुआ अभी घर जाना है। ऐसे2 अपन से बात करनी होती है अन्दर में। 84 का चक्र पूरा हुआ। अभी जाते हैं बाबा के पास। बाबा को याद करने से जन्म–जन्मान्तर के पाप भस्म हो जाते हैं। हम स्वदर्शचक्रधारी भी हैं। यह तुम जानते हो। जो यहाँ के होंगे दैवी सम्प्रदाय। सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी वह जरूर आवेंगे। आगे चल ड्रामा की नूँध चलती रहती है। ड्रामा प्लैनअनुसार जो कुछ हो रहा है वा हम करते हैं। बिल्कुल ड्रामा अनुसार ठीक करते हैं। खबरदार रहना है। तुम पुण्यात्मा बनते हो तो कोई भी पाप नहीं करना है। तुम आये ही हो पवित्र पुण्यात्मा बनने लिए। यह बहुत सहज है। सिर्फ अटेन्शन देना चाहिए। अपवित्रता है सबसे खराब। पवित्रता है सबसे फर्स्ट क्लास क्वालिफीकेशन। तुम पवित्र देवी देवता बनते हो। तुम पवित्र देवी–देवता बनते हो। फिर हैं मनुष्य। देवताओं को मनुष्य नहीं कहा जाता। मनुष्य से ही देवता बनते हैं। तुम्हारे लिए यह सभी बातें हैं। अभी तो तुम मनुष्य से देवता बनते हो। पहले2 तुम ब्राह्मण वर्ण में आते हो। दिलवाला मंदिर तुम्हारा एक्युरेट यादगार है। बोलो हम राजयोग सीखते हैं। सिखलाने वाला ऊँच ते ऊँच बाप है। भागीरथ पर आते हैं। वह है जड़ यादगार। यह है चैतन्य। आदीदेव–आदीदेवी भी है। इनको राजयोग भी कहा जाता है। ऊपर में है राजाई के चित्र। यह यादगार बिल्कुल एक्युरेट है। नीचे राजयोग की तपस्या है। तुम तपस्या कर रहे हो। बाप को याद करते हो। यह एमआबजेक्ट है। वन्डर है ना। तुम जानते हो हम देवता बनेंगे। तुम पूछ भी सकते हो। दिलवाला मंदिर देखा है? हम चैतन्य हैं वह जड़ हमारा यादगार है। शिवबाबा है ऊँच ते ऊँच। वह बाप ही हमको ब्राह्मण बनाकर फिर देवता बनाते हैं। पढ़ाई से हम यह बनते हैं। बात तो बिल्कुल सहज है। पढ़ने वाले तो नम्बरवार ही हैं। पढ़ाई में कोई तकलीफ होती हो तो बेहद के बाप को लिखना चाहिए। बाप–दादा केअर ऑफ ब्रह्माकुमारी। कोई कम्पलेन हो, बाबा बैठा हैं। बच्चों पर बहुत प्यार रहता है जो अच्छी रीत चलते हैं। यहाँ आते है तो कहते है बच्चों से तंग हो जाते हैं। तंग करते हैं तो प्यार थोड़े ही करेंगे। इसमें भी ऐसे है खराब हो पड़ते हैं। ब्राह्मणी को लिख देंगे यह छी–छी है। रहम दिल बाप कहते है फिर भी कहाँ जावेंगे। लिखवा लो। यह यह किया है तोबा भरता हूँ फिर ऐसी कड़ी हार नहीं खाऊंगा। बहुत बच्चे हार खा लेते हैं। इसको कहा जाता है हार–जीत का खेल। बाप है तब लड़ाई शुरू हो जाती है माया की। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

* :: ओमशान्ति :: *